शाह टाइम्स

गांधी के शब्द व कर्म एक ही थे: तिवारी

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी द्वारा महात्मा गांधी के 150वें जन्म वर्ष समापन के अवसर पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। आभासी मंच पर आयोजित इस परिसंवाद का विषय था लेखक के रूप में गांधी। परिसंवाद में गिरीश्वर मिश्र ने स्वाधीनता के साहित्य पर गांधी का प्रभाव, हरीश त्रिवेदी ने विश्व साहित्य पर लेखक गांधी का प्रभाव ,मधुकर उपाध्याय ने हिंद स्वराज आज, सच्चिदानंद जोशी ने संपादक के रूप में गांधी, सितांशु यशश्चंद्र ने गुजरात और गांधी,वर्षा दास ने राजनीतिक अस्त्र के रूप में गांधी लेखन एवं विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने भारतीय साहित्य पर गांधी का प्रभाव पर चर्चा की। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। पहली पुस्तक थी गांधी और 1980 के बाद का हिंदी गुजराती साहित्य, इस पुस्तक के संपादक हैं आलोक गुप्त और दूसरी पुस्तक थी बापू कथा चौदस जिसे मधुकर उपाध्याय ने लिखा है। बच्चों के लिए लिखी गई इस पुस्तक में महात्मा गांधी की जीवन गाथा को 14 कहानियों में प्रस्तुत किया गया है।

गांधी के शब्द और कर्म एक ही थे : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

नई दिल्ली।

साहित्यकार विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि हमारे समय के दो प्रमुख विचारक मार्क्स और गांधी में जहां मार्क्स का प्रिय शब्द संघर्ष है जो आक्रोश और हिंसा पर केंद्रित है वहीं गांधी का प्रिय शब्द सत्याग्रह है जो करुणा और अहिंसा से आता है।

गांधी ने अपने विचारों को कर्म से करके दिखाया जिसका उस समय की राजनीति में नितांत अभाव था। लेखकों को भी उनकी सत्यता और मौलिक विचारों ने बहुत प्रभावित किया और आज तक उनका प्रभाव देखा जा सकता है। श्री तिवारी ने यह बात साहित्य अकादमी द्वारा महात्मा गांधी जयंती पर ऑनलाइन आयोजित 'लेखक के रूप में गांधी' परिसंवाद में कही। इस अवसर पर दो पुस्तकों का भी लोकार्पण किया गया।

साहित्य अकादमी के सचिव के श्रीनिवासराव ने कहा कि बापू की भारतीय परंपराओं में गहरी आस्था थी और उन्होंने वहीं से सत्य और अहिंसा के दो प्रमुख विचार ग्रहण किए और विश्व को उनकी सार्थकता से परिचित कराया। हरीश त्रिवेदी ने उनके विशाल व्यक्तित्व को याद करते हुए कहा कि बापू जैसा महापुरुष मानवता के इतिहास में कोई और नहीं हुआ जिसका प्रभाव व्यापक रूप से विश्व के लेखकों पर पड़ा हो। उन्होंने भारतीय अंग्रेजी लेखकों के उदाहरण देते हुए बताया कि मुल्कराज आनंद, आरके नारायण और राजा राव ने उन पर उपन्यास लिखे। सच्चिदानंद जोशी ने उनकी संपादकीय प्रतिभा का उल्लेख करते हुए कहा कि अपने विचार पूरी दुनिया तक पहुंचाने के लिए उन्होंने विभिन्न भाषाओं में समाचार पत्र निकालकर जन जन से संवाद कायम किया।

> **बापू की भारतीय परंपराओं में गहरी आस्था थी और उन्होंने वहीं से सत्य और अहिंसा के दो प्रमुख विचार ग्रहण किए और विश्व को उनकी सार्थकता से परिचित कराया**

गिरीश्वर मिश्र ने बापू द्वारा लिखी गई छोटी-छोटी पुस्तिकाओं का जिक्र करते हुए कहा कि इन पुस्तिकाओं में भी समग्र जीवन की चिंता करने वाली अनेक ऐसी बातें है जो कि संभवत लेखक ही महसूस कर सकते है। उन्होंने मैथिलीशरण गुप्त ,माखनलाल चतुर्वेदी, प्रेमचंद्र , जैनेन्द्र आदि का जिक्र करते हुए कहा कि यह सब वह लेखक थे जिनको गांधी ने हृदय तक प्रभावित किया था । सितांशु यशश्चंद्र ने गांधी का गुजरात साहित्य पर क्या प्रभाव है उसकी चर्चा की। उमाशंकर जोशी द्वारा उनकी मृत्यु पर लिखी कविता का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि गांधी हमेशा देश के लिए बलिदान होना चाहते थे। साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि गांधी अपने समय से आगे की सोच रखते थे उन्हें अब भी अच्छी तरह से जानने और समझने की जरूरत है। कार्यक्रम का संचालन संपादक हिंदी अनुपम तिवारी ने किया।

'गांधी के शब्द और कर्म एक हीं थे'

हमारे समय के दो प्रमुख विचारक मार्क्स और गांधी में जहां मार्क्स का प्रिय शब्द संघर्ष है जो आक्रोश और हिंसा पर केंद्रित है वहीं गांधी का प्रिय शब्द सत्याग्रह है जो करुणा और अहिंसा से आता है। गांधी ने अपने विचारों को कर्म से करके दिखाया, जिसका उस समय की राजनीति में नितांत अभाव था।यह बात शुक्रवार को महात्मा गांधी के 150वें जन्म वर्ष समापन के अवसर पर साहित्य अकादमी द्वारा 'लेखक के रूप में गांधी' विषय पर आयोजित किए गए एक परिसंवाद में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कही। उन्होंने कहा कि लेखकों को भी उनकी सत्यता और मौलिक विचारों ने बहुत प्रभावित किया और आज तक उनका प्रभाव देखा जा सकता है।

नवोदय टाइम्स
Sat, 03 October 2020
https://epaper.navodayatimes.i

साहित्य अकादमी : परिसंवाद

गांधी के शब्द और कर्म एक ही थे : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

साहित्य अकादेमी द्वारा महात्मा गांधी के 150वें जन्म वर्ष समापन के अवसर पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। आभासी मंच पर आयोजित इस परिसंवाद का विषय था लेखक के रूप में गांधी। परिसंवाद में गिरीश्वर मिश्र ने स्वाधीनता के साहित्य पर गांधी का प्रभाव, हरीश त्रिवेदी ने विश्व साहित्य पर लेखक गांधी का प्रभाव, मधुकर उपाध्याय ने हिंद स्वराज आज, सच्चिदानंद जोशी ने संपादक के रूप में गांधी, सितांशु यशश्चंद्र ने गुजरात और गांधी, वर्षा दास ने राजनीतिक अस्त्र के रूप में गांधी लेखन एवं विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने भारतीय साहित्य पर गांधी का प्रभाव पर चर्चा की। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। पहली पुस्तक थी गांधी और 1980 के बाद का हिंदी गुजराती साहित्य, इस पुस्तक के संपादक हैं आलोक गुप्त और दूसरी पुस्तक थी बापू कथा चौदस जिसे मधुकर उपाध्याय ने लिखा है। बच्चों के लिए लिखी गई इस पुस्तक में महात्मा गांधी की जीवन गाथा को 14 कहानियो में प्रस्तुत किया गया है।

कार्यक्रम के आरंभ में सभी वक्ताओं का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के श्रीनिवासराव ने कहा कि गांधी की भारतीय परंपराओं में गहरी आस्था थी और उन्होंने वहीं से सत्य और अहिंसा के दो प्रमुख विचार ग्रहण किए और पूरे विश्व को उनकी सार्थकता से परिचित कराया। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्योत्सव के दौरान लगाई उस पुस्तक प्रदर्शनी का भी जिक्र किया जिसमें गांधी द्वारा और उन पर विभिन्न भाषाओं में लिखी गई 700 पुस्तकें प्रदर्शित की गई थी।

हरीश त्रिवेदी ने उनके विशाल व्यक्तित्व को याद करते हुए कहा कि उनका जैसा महापुरुष मानवता के इतिहास में कोई और नहीं हुआ जिस का प्रभाव इतने व्यापक रूप से पूरे विश्व के लेखकों पर पड़ा हो। उन्होंने भारतीय अंग्रेजी लेखकों के उदाहरण देते हुए बताया कि मुल्कराज आनंद, आर के नारायण और राजा राव ने उन पर उपन्यास लिखे। आगे उन्होंने कहा कि ऐसी बहुत सी रचनाएं हैं जिनमें सीधे-सीधे तौर पर गांधी नहीं आते हैं लेकिन परोक्ष रूप से उनको चित्रित किया गया है। वर्षा दास ने अपने वक्तव्य में कहा कि राजनीति में सत्य और अहिंसा को एक शस्त्र के रूप में प्रयुक्त करने का श्रेय गांधी को ही जाता है। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में उनके द्वारा अहिंसात्मक कार्यवाही यों का जिक्र करते हुए बताया कि बचपन में जो अहिंसा उनके लिए धार्मिक थी वह बड़े होकर सामाजिक बदलाव के रूप से सामने आई। उन्होंने गांधी दर्शन को एक वैचारिक अस्त्र मानते हुए कहा की इसका व्यापक असर पूरे विश्व पर हुआ। मधुकर उपाध्याय ने हिंद स्वराज की चर्चा करते हुए बताया कि वह संभवतः विश्व की अकेली ऐसी पुस्तक है जो एक संपादक और पाठक का आपसी विचार विमर्श या संवाद है। उन्होंने गांधी द्वारा हिंद स्वराज मे उठाई गई उन तीन प्रमुख बातों का भी जिक्र किया जो यह चित्रित करती हैं कि इतिहास को हम कैसे समझें, सामुदायिक सद्भाव को कैसे पैदा करें और मशीन को आधुनिक युग में कैसे परिभाषित करें। सच्चिदानंद जोशी ने उनकी संपादकीय प्रतिभा का उल्लेख करते हुए कहा कि अपने विचार पूरी दुनिया तक पहुंचाने के लिए उन्होंने विभिन्न भाषाओं में समाचार पत्र निकालकर जन जन से संवाद कायम किया। गिरीश्वर मिश्र ने उनको विलक्षण लेखक की उपमा दी। उन्होंने उनके द्वारा लिखी गई छोटी-छोटी पुस्तिकाओं का जिक्र करते हुए कहा कि इन पुस्तिकाओं में भी समग्र जीवन की चिंता करने वाली अनेक ऐसी बातें हैं जो कि संभवत लेखक ही महसूस कर सकते हैं। उन्होंने मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, प्रेमचंद्र, जैनेन्द्र आदि का जिक्र करते हुए कहा कि यह सब वह लेखक थे जिनको गांधी ने हृदय तक प्रभावित किया था। सितांशु यशश्चंद्र ने गांधी का गुजरात साहित्य पर क्या प्रभाव है उसकी चर्चा की। उमाशंकर जोशी द्वारा उनकी मृत्यु पर लिखी कविता का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि गांधी हमेशा देश के लिए बलिदान होना चाहते थे।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि हमारे समय के दो प्रमुख विचारक मार्क्स और गांधी में जहां मार्क्स का प्रिय शब्द संघर्ष है जो आक्रोश और हिंसा पर केंद्रित है वहीं गांधी का प्रिय शब्द सत्याग्रह है जो करुणा और अहिंसा से आता है। गांधी ने अपने विचारों को कर्म से करके दिखाया जिसका उस समय की राजनीति में नितांत अभाव था। लेखकों को भी उनकी सत्यता और मौलिक विचारों ने बहुत प्रभावित किया और आज तक उनका प्रभाव देखा जा सकता है। समापन वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि गांधी अपने समय से आगे की सोच रखते थे उन्हें अब भी अच्छी तरह से जानने और समझने की जरूरत है। कार्यक्रम का संचालन संपादक हिंदी अनुपम तिवारी ने किया।

साहित्य अकादेमी द्वारा लेखक के रूप में गांधी विषय पर परिसंवाद

आलोकपर्व नेटवर्क

साहित्य अकादेमी द्वारा महात्मा गांधी के 150 वें जन्म वर्ष समापन के अवसर पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।आभासी मंच पर आयोजित इस परिसंवाद का विषय था लेखक के रूप में गांधी। परिसंवाद

में गिरीश्वर मिश्र ने स्वाधीनता के साहित्य पर गांधी का प्रभाव, हरीश त्रिवेदी ने विश्व साहित्य पर लेखक गांधी का प्रभाव ,मधुकर उपाध्याय ने हिंद स्वराज आज , सच्चिदानंद जोशी ने संपादक के रूप में गांधी, सितांशु यशश्चंद्र ने गुजरात और गांधी,वर्षा दास ने राजनीतिक अस्त्र के रूप में गांधी लेखन एवं विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने भारतीय साहित्य पर गांधी का प्रभाव पर चर्चा की। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। पहली पुस्तक थी गांधी और 1980 के बाद का हिंदी गुजराती साहित्य ,इस पुस्तक के संपादक हैं आलोक गुप्त और दूसरी पुस्तक थी बापू कथा चौदस जिसे मधुकर उपाध्याय ने लिखा है।बच्चों के लिए लिखी गई इस पुस्तक में महात्मा गांधी की जीवन गाथा को 14 कहानियो में प्रस्तुत किया गया है।

कार्यक्रम के आरंभ में सभी वक्ताओं का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के श्रीनिवासराव ने कहा कि गांधी की भारतीय परंपराओं में गहरी आस्था थी और उन्होंने वहीं से सत्य और अहिंसा के दो प्रमुख विचार ग्रहण किए और पूरे विश्व को उनकी सार्थकता से परिचित कराया।उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्योत्सव के दौरान लगाई उस पुस्तक प्रदर्शनी का भी जिक्र किया जिसमें गांधी द्वारा और उन पर विभिन्न भाषाओं में लिखी गई 700 पुस्तकें प्रदर्शित की गई थी।

हरीश त्रिवेदी ने उनके विशाल व्यक्तित्व को याद करते हुए कहा कि उनका जैसा महापुरुष मानवता के इतिहास में कोई और नहीं हुआ जिस का प्रभाव इतने व्यापक रूप से पूरे विश्व के लेखकों पर पड़ा हो ।उन्होंने भारतीय अंग्रेजी लेखकों के उदाहरण देते हुए बताया कि मुल्कराज आनंद, आर के नारायण और राजा राव ने उन पर उपन्यास लिखे। आगे उन्होंने कहा कि ऐसी बहुत सी रचनाएं हैं जिनमें सीधे-सीधे तौर पर गांधी नहीं आते हैं लेकिन परोक्ष रूप से उनको चित्रित किया गया है। वर्षा दास ने अपने वक्तव्य में कहा कि राजनीति में सत्य और अहिंसा को एक शस्त्र के रूप में प्रयुक्त करने का श्रेय गांधी को ही जाता है ।उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में उनके द्वारा अहिंसात्मक कार्यवाही यों का जिक्र करते हुए बताया कि बचपन में जो अहिंसा उनके लिए धार्मिक थी वह बड़े

होकर सामाजिक बदलाव के रूप से सामने आई ।उन्होंने गांधी दर्शन को एक वैचारिक अस्त्र मानते हुए कहा की इसका व्यापक असर पूरे विश्व पर हुआ। मधुकर उपाध्याय ने हिंद स्वराज की चर्चा करते हुए बताया कि वह संभवतः विश्व की अकेली ऐसी पुस्तक है जो एक संपादक और पाठक का आपसी विचार विमर्श या संवाद है । उन्होंने गांधी द्वारा हिंद स्वराज मे उठाई गई उन तीन प्रमुख बातों का भी जिक्र किया जो यह चित्रित करती हैं कि इतिहास को हम कैसे समझें, सामुदायिक सद्भाव को कैसे पैदा करें और मशीन को आधुनिक युग में कैसे परिभाषित करें ।सच्चिदानंद जोशी ने उनकी संपादकीय प्रतिभा का उल्लेख करते हुए कहा कि अपने विचार पूरी दुनिया तक पहुंचाने के लिए उन्होंने विभिन्न भाषाओं में समाचार पत्र निकालकर जन जन से संवाद कायम किया। गिरीश्वर मिश्र ने उनको विलक्षण लेखक की उपमा दी । उन्होंने उनके द्वारा लिखी गई छोटी-छोटी पुस्तिकाओं का जिक्र करते हुए कहा कि इन पुस्तिकाओं में भी समग्र जीवन की चिंता करने वाली अनेक ऐसी बातें हैं जो कि संभवत लेखक ही महसूस कर सकते हैं। उन्होंने मैथिलीशरण गुप्त ,माखनलाल चतुर्वेदी, प्रेमचंद्र , जैनेन्द्र आदि का जिक्र करते हुए कहा कि यह सब वह लेखक थे जिनको गांधी ने हृदय तक प्रभावित किया था । सितांशु यशश्चंद्र ने गांधी का गुजरात साहित्य पर क्या प्रभाव है उसकी चर्चा की। उमाशंकर जोशी द्वारा उनकी मृत्यु पर लिखी कविता का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि गांधी हमेशा देश के लिए बलिदान होना चाहते थे।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि हमारे समय के दो प्रमुख विचारक मार्क्स और गांधी में जहां मार्क्स का प्रिय शब्द संघर्ष है जो आक्रोश और हिंसा पर केंद्रित है वहीं गांधी का प्रिय शब्द सत्याग्रह है जो करुणा और अहिंसा से आता है। गांधी ने अपने विचारों को कर्म से करके दिखाया जिसका उस समय की राजनीति में नितांत अभाव था। लेखकों को भी उनकी सत्यता और मौलिक विचारों ने बहुत प्रभावित किया और आज तक उनका प्रभाव देखा जा सकता है ।समापन वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि गांधी अपने समय से आगे की सोच रखते थे उन्हें अब भी अच्छी तरह से जानने और समझने की जरूरत है। कार्यक्रम का संचालन संपादक हिंदी अनुपम तिवारी ने किया।